स्त्री विमर्श के व्याज से : 'आपका बंटी'

डॉ. सुषमा सहरावत

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
कमला नेहरू कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सारांश

मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित सुप्रसिद्ध उपन्यास 'आपका बंटी' यद्यपि तलाकशुदा माता–पिता के बच्चे के मनोविज्ञान को आधार बनाकर लिखा गया है परंतु इसमें शकुन उन तलाकशुदा स्त्रियों की प्रतिनिधि पात्र बनकर उभरी है जिन्हें तलाक के कारण व्यथा, पीड़ा, अपमान और यंत्रणा के साथ ही अंतर्द्वंद्व की व्याकुलता, अकेलेपन की घुटन तथा तनावपूर्ण परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। प्रस्तुत लेख स्त्री विमर्श के इसी पहलू को उजागर कर लिखा गया है।

वरिष्ठ लेखिका मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित उपन्यास 'आपका बंटी' को प्रकाशित हुए लगभग 50 वर्ष पूर्ण होने को हैं किंतु यह उपन्यास आज भी अपने कथ्य को लेकर अपनी समीचीनता सिद्ध करता है। आज भी जब हम इसे पढ़ते हैं तो यह उतना ही प्रासंगिक लगता है कि जितना कि अपने प्रकाशन वर्ष (1971) के समय था। यद्यपि इसकी आधिकारिक कथा तलाकशुदा दम्पत्ति की सन्तान बंटी के त्रासद जीवन की ही है किंतु इसमें बंटी की मम्मी शकुन की प्रासंगिक कथा के माध्यम से स्त्री विमर्श के स्वर भी हमें इसमें दिखाई देते हैं। मन्नू भण्डारी ने शकुन द्वारा तलाकशुदा स्त्री की वेदना, उसकी व्यथा–कथा को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है।

'आपका बंटी' में शकुन उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें तलाक के कारण व्यथा, पीड़ा, अपमान और यन्त्रणा के त्रासद अनुभवों से गुजरना पड़ता है। शकुन का अहंवादी दृष्टिकोण और अजय के मध्ययुगीन संस्कार उन दोनों के बीच तलाक का कारण बनते हैं। शादी करने के 'गलत निर्णय' का एहसास अजय और शकुन दोनों को ही होने लगा था। एक–दूसरे के बीच तालमेल बैठाने की कोशिश भी समझौते की दृष्टि से न करके एक–दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकाँक्षा से ही की जाती थी। अन्दर ही अन्दर चलने वाली इस अजीब लड़ाई में उनके दिन तर्कों और बहसों में बीतते थे तथा रातें ठण्डी लाशों की तरह लेटे–लेटे एक–दूसरे को बेचैन और छटपटाते हुए देखने में कटती थीं। वे दोनों ही इस बात की प्रतीक्षा करते रहते थे कि कब सामने वाला अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निरे एक शून्य में बदल कर अपनी हार मान लेता है ताकि उसकी सारी गलतियों को माफ करके उसे अपनी उदारता और क्षमाशीलता का परिचय देने का मौका मिल सके। उनके बीच मतभेद इतने बढ़ गए थे कि वे आपसी हर व्यवहार को एक नया दाँव–पेच समझने लगे थे। धीरे–धीरे उनमें फासले इतने बढ़ते चले गए कि अपनी सन्तान की खातिर भी वे 'एडजेस्टमेंट' नहीं कर सके और बंटी भी उनके बीच की खाई को नहीं पाट सका।

अजय से अलग रहने पर शकुन को अलगाव के त्रास का अनुभव होता है। क्योंकि ''आज भी तलाक को घृणित तथा हेय माना जाता है और तलाकशुदा स्त्री को यथेष्ट सामाजिक सम्मान नहीं मिलता।''[1] कॉलेज में भी तथा

आसपास भी लोग उसे अजीब–सी दृष्टि से देखते हैं किंतु शकुन का अहं उसे समझौता करने से रोकता रहता है। जब कभी भी वकील चाचा उसे कहते हैं कि अजय के मन में बंटी को लेकर एक कचोट–सी है तो शकुन के मन में आशा की एक हल्की–सी किरण कौंध जाती है कि शायद बंटी ही उन्हें फिर से एक कर दे। अजय द्वारा बंटी के लिए भेजे गए खिलौनों को देखकर भी शकुन की यह उम्मीद तलाक के दिन टूट जाती है और शकुन परेशान एवं विचलित हो उठती को लगता है कि अजय ने बंटी को माध्यम बनाकर उस तक भी 'कुछ' भेजा है, किंतु आशा है। हालाँकि ''उसने कई बार अपने और अजय के सम्बन्धों के रेशे–रेशे उधेड़े हैं. स्थिति में बहुत लिप्त होकर भी और सारी स्थिति से बहुत तटस्थ होकर भी पर निष्कर्ष हमेशा एक ही निकला है कि दोनों ने एक–दूसरे को कभी प्यार किया ही नहीं।''[2] यह सारी में चलते जाने के अनुभव के समान ही था, वह तलाक को सहजता से नहीं ले पाती है और जानते हुए भी कि अजय के साथ उसका दस वर्षों का विवाहित जीवन एक अंधेरी सुरंग उसे लगता है जैसे किसी ने उसे भीतर से मथ दिया हो। वस्तुतः ''... जिस अकेलेपन, निजता और यातना का वह साक्षात्कार करती है, वे सभी उसे असंतुष्ट बेचैन बनाते हैं, उसके रेशे रेशे को तान देते हैं।''[3] बंटी को शकुन मात्र अपना बेटा ही न समझकर एक हथियार भी समझती थी जिससे वह अजय को 'टारचर कर सकती थी। उसे लगता है। जैसे अजय को हराने की आकाँक्षा में वह स्वयं ही हार गई है। उसे चुभन इस बात की है कि मीरा ने अजय से वह सब कुछ क्यों पाया जो कि उसका प्राप्य था। अजय के साथ न रह पाने के दंश की अपेक्षा यह अजय को हरा न सकने की कचोट थी। डॉ. जोशी का चयन भी वह अजय को दिखाने के लिए मीरा की तुलना में करती है। शकुन अपने को धीरे–धीरे बंटी से काटकर उसे और अधिक आत्मनिर्भर बनाना चाहती है तथा उसे सही ज़िन्दगी देना चाहती है। ममी का तलाक हो जाने पर बंटी अपनी ममी को प्रसन्न रखने के लिए जिस प्रकार अपनी उम्र से कहीं ज्यादा समझदार हो गया था। उसे शकुन भली–भाँति समझती थी और ''उम्र से पहले ओढ़ी हुई उसकी समझदारी को कितनी तकलीफ के साथ झेल पाती थी वह। शकुन के हर दुःख को अपना दुःख और उसकी हर कही–अनकही इच्छा को एक आदेश–सा बना लेने की बंटी की मजबूरी ने शकुन को अपनी ही नज़रों में अपराधी बनाकर छोड़ दिया था। दिन में दो–चार बार पापा की बात करने वाले बच्चे ने कैसे इस शब्द को काटकर फेंक दिया था ... शब्द का ही नहीं, अजय के भेजे खिलौने, उसकी तस्वीर तक को अलमारी में बंद कर दिया था।''[4] शकुन जानती है कि बंटी तलाकशुदा माता–पिता का बच्चा होने के कारण असामान्य–सा हो गया है। इसीलिए वह सोचती है कि पापा और दो बच्चों का साथ बंटी को सामान्य बना सकेगा। इसके अतिरिक्त शकुन कहीं–न–कहीं यह भी जानती है कि बड़ा होने पर बंटी का स्वयं का स्वतंत्र अस्तित्व हो जाएगा और तब आज के संदर्भ बदल जाएंगे एवं शकुन तब सर्वथ अकेली हो जाएगी। इन्हीं सब बातों को सोचकर शकुन डॉ. जोशी से शादी कर लेती है। असल में परेशानी ही शकुन द्वारा डॉ. जोशी से शादी कर लेने पर उत्पन्न होती है।

नये घर में बंटी अपने अत्यधिक संवेदनशील स्वभाव के कारण उस माहौल में सामंजस्य नहीं बैठा पाता।

परिणाम यह होता है कि शकुन स्वयं उसे अपनी नई गृहस्थी में एक 'अनावश्यक तत्त्व' तथा 'दरार' मानने लगती है और चाहती है कि बंटी अपने पापा के पास कलकत्ता चला जाए क्योंकि ''बंटी को दरार ही बनना है तो मीरा और अजय के बीच में बने। अजय भी तो जाने कि... पुरानी स्लेट इतनी जल्दी और इतनी आसानी से साफ नहीं होती।'' शकुन अब अपने तथा डॉ. जोशी के बीच में किसी प्रकार की बाधा बर्दाश्त करने को तैयार नहीं है, यहाँ तक कि बंटी की भी नहीं क्योंकि अगर ''बंटी उसके तथा अजय के बीच सेतु नहीं बन सका तो वह उसे अपने और डॉक्टर के बीच में बाधा भी नहीं बनने देगी।''[5]

शकुन अपनी ज़िन्दगी निर्विघ्न रूप से जीने के लिए बंटी को कलकत्ता भेज कर सबसे बड़ा मूल्य चुकाती है और ऐसा करके स्वयं को एकदम खाली और खोखला महसूस करती है। बंटी के कारण ही उसका परिचय डॉ. जोशी से हुआ था। उसे बंटी की यादें कचोटने लगती हैं और उसका आवेग आँसुओं की धारा में बह

निकलता है कि क्यों नहीं उसने बंटी को कलकत्ता जाने से रोक लिया? उसे लगता है कि बंटी अभी भी उससे कह रहा है ''मत रोओ ममी, रोओ मत।'' असल में, ''अहं और गुस्से से भरे–भरे, शकुन की लाई हुई चीज़ों को बिना देखे बिना छुए एक ओर सरका देने, उमड़ते आँसुओं को भीतर ही भीतर रोककर सूखी आँखों से मोटर में बैठकर विदा हो जाने की व्यथा बंटी से कहीं ज्यादा शकुन की अपना व्यथा है, और ऐसी कथा व्यथा जिसे कोई भी बँटा नहीं सकता। आज भी नहीं, आगे भी नहीं।''[6] इस प्रकार शकुन अपने बेटे के बिछुड़ने की पीड़ा में लगातार टूटती और बिखरती रहती है। उसे लगता है कि उसका व्यक्तित्व दो पुरुषों के मध्य विभाजित होकर रह गया है और उसका अन्तर्मन केवल बंटी के ही साथ रह गया है, किंतु इतना सब होने के बावजूद भी वह बंटी को अपने साथ नहीं रख पाती है और यही शकुन की त्रासदी है। इस तरह ''शकुन का स्वतंत्र व्यक्तित्व, पति और पुत्र के सम्बन्धों के बीच निरन्तर तनावपूर्ण और टकराता रहता है। उसकी यातना अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के साथ पति और पुत्र सम्बन्धों के तनावपूर्ण और विषम हो उठने की यातना है।''[7]

'आजकल' मासिक पत्रिका में स्वयं मन्नू भण्डारी जी ने अपने साक्षात्कार में यह कहा है कि ''एक तरफ शकुन का मातृत्व है और दूसरी तरफ उसका स्त्रीत्व । यदि वह स्त्रीत्व की आवाज सुनकर दोबारा शादी कर लेती है तो उसका मातृत्व तिलमिलाता है और यदि माँ बनकर रहना चाहती है तो उसका स्त्रीत्व। वह न तो पूरी तरह से माँ बन पाती है और न ही पूरी तरह से स्त्री। यही उसकी त्रासदी है।''[8]

इस प्रकार तलाकशुदा स्त्री के जीवन की व्यथा को वाणी प्रदान करता हुआ यह उपन्यास नारी मन की वेदना और अंतर्द्वंद्व की गहराई से पड़ताल करता है।

संदर्भ सूची

1. हिन्दी उपन्यास में कामकाजी महिला, डॉ. रोहिणी अग्रवाल, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1992, पृ. 153.
2. आपका बंटी, मन्नू भण्डारी, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1971, पृ. 37.
3. सृजनशीलता का संकट, डॉ. नित्यानंद तिवारी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1991, पृ. 60.
4. आपका बंटी, मन्नू भण्डारी, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1971, पृ. 115.
5. वही, पृ. 120.
6. वही, पृ. 193.
7. सृजनशीलता का संकट, डॉ. नित्यानंद तिवारी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1991, पृ. 58.
8. 'आजकल' मासिक पत्रिका, अंक–मार्च, 2008.

Copyright © 2016, Dr. Sushma Sehrawat. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.